मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

अक्तूबर 2012 वर्ष 17, अंक 10

संदर्भ : जन्मदिन स्मरण, 28 अक्तूबर

भगिनी निवेदिता : विदेशी भारतीय विदुषी

भगिनी निवेदिता एक सामाजिक कार्यकर्ता, लेखिका, शिक्षिका एवं स्वामी विवेकानंद की शिष्या थीं। वे एक स्कॉट-आयरिश परिवार में सन् 1867 में पैदा हुई थीं। उनका बचपन और युवावस्था का प्रारंभिक समय आयरलैंड में बीता। अपने पिता और शिक्षक से उन्होंने यह पाठ सीखा कि मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। उन्होंने एक स्कूल शिक्षिका के रूप में कार्य किया और बाद में स्वयं ही एक स्कूल भी खोला।

सिस्टर निवेदिता को यह भारतीय नाम स्वामी विवेकानंद ने दिया था, जिनसे वह पहली बार 1895 में लंदन में मिली थीं। उन्हीं की प्रेरणा से वह 1898 में कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) आईं। उनका वास्तविक नाम मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल था। स्वामी जी ने उन्हें यह नाम उनके द्वारा ब्रह्मचर्य पालन करने की शुरुआत में दिया। दरअसल, सगाई के तुरंत बाद नोबल के मंगेतर का निधन हो गया था। निवेदिता का अर्थ होता है 'ईश्वर को समर्पित'।

सिस्टर निवेदिता ने सन् 1898 में कलकत्ता के बागबाजार क्षेत्र में लड़कियों का एक स्कूल खोला। वे वैसी लड़कियों को शिक्षित करना चाहती थीं जो बुनियादी शिक्षा तक से भी वंचित थीं। 1899 में कलकत्ता में जब प्लेग फैला तो उन्होंने गरीब मरीजों की जी-जान से सेवा की।

निवेदिता सद्यःस्थापित रामकृष्ण मिशन से गहरे जुड़ी थीं। लेकिन साथ ही भारतीय राष्ट्रीयता के क्षेत्र में भी वह काफी सक्रिय थीं। वह रामकृष्ण की आध्यात्मिक सहधर्मिणी शारदा देवी के काफी करीब थीं। वस्तुतः मिशन की स्थापना के पीछे शारदा देवी की बड़ी प्रेरणा थी।

निवेदिता का 13 अक्तूबर, 1911 को दार्जीलिंग में निधन हो गया। उनका जन्म भी अक्तूबर माह में ही (28 तारीख को) हुआ था। उनके कब्र पर लिखा है—यहाँ सिस्टर निवेदिता विश्राम कर रही हैं जिन्होंने अपना सब कुछ भारत माँ को समर्पित कर दिया।

बसे दूर गाँवों को नगरों से जोड़ें
पड़ी शुष्क भूमि में नदियों को मोड़ें
कुरीतों के बंधन सभी तोड़ डालें
मगर दीन-दलितों के दिल हम न तोड़ें
सपने जो थे 'बापू' के हम सच बनाएँ
चलो सब चलें देश आगे बढ़ाएँ।

डॉ. बी. पी. दुबे,

संदर्भ : जन्मदिन स्मरण, 2 अक्तूबर

हमें चाहिए कि थोड़ा पढ़ें, उस पर विचार करें और उस पर अमल करें। अमल करते समय जो ठीक न लगे उसे छोड़ दें और आगे बढ़ें। —महात्मा गाँधी

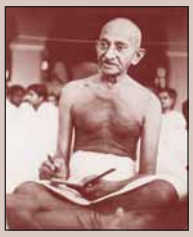

एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। —गणेश शंकर विद्यार्थी

जन्म दिवस : 26 अक्तूबर, 1890

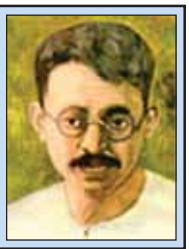

डाक टिकटें : नन्हे कागजी राजदूत

दुनिया भर में डाक टिकटों के विशेषज्ञ ही नहीं, आम लोग भी डाक टिकटों को 'नन्हे कागजी राजदूत' की संज्ञा देते हैं। संचार क्रांति तथा संपन्न डाक टिकटों के इस युग में जी रहे लोग शायद डाक टिकटों के अतीत के बारे में अधिक नहीं जानते हैं। विश्व का प्रथम डाक टिकट पैनी ब्लैक माना जाता है जो 6 मई, 1840 को इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की तस्वीर के साथ जारी हुआ था। भारत में पहला डाक टिकट आधिकारिक रूप से 1 अक्तूबर, 1854 को महारानी विक्टोरिया की तस्वीर के साथ ही जारी किया गया था। हालाँकि इसके पूर्व एशिया में पहला डाक टिकट तत्कालीन सिंध प्रांत में 1 जुलाई, 1852 को जारी किया जा चुका था, जिसे सिंध डाक टिकट के नाम से ख्याति मिली हुई है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों की तरह भारत में भी लंबे समय तक राजा-रानी की तस्वीरों वाले डाक टिकट ही राज करते रहे। भारत में आजादी के बाद तमाम क्षेत्रों में बुनियादी बदलाव आए और डाक टिकट भी इससे अछूते नहीं रहे। अगर यह कहा जाए कि डाक टिकटों को बारीकी से देखने पर आप लघु भारत का दर्शन कर सकते हैं तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

9 अक्तूबर को विश्व डाक दिवस एवं 9 से 15 अक्तूबर तक राष्ट्रीय डाक सप्ताह मनाया जाता है। **–संपा.**

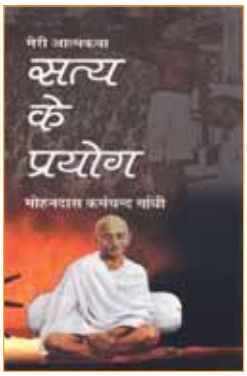

सत्य के प्रयोग, महात्मा गाँधी की आत्मकथा है। इस किताब में उन्होंने अपने जीवन में सत्य के साथ किए गए प्रयोगों का उल्लेख किया है। सन् 1925 से '29 के बीच मूलतः गुजराती में लिखी इस किताब का अनुवाद महादेव देसाई ने अँग्रेजी में किया था। सत्य पर केंद्रित इस किताब को आध्यात्मिक, राजनीतिक व सामाजिक बदलाव के नए वाहक के रूप में देखा जाता है।

शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि वह बच्चे के मन, शरीर और आत्मा का सर्वांगीण विकास करे। किताबी शिक्षा ज्ञान प्राप्ति का न तो आरंभ है और न अंत।

–महात्मा गाँधी

रिपोर्ट

माता कौशल्या महोत्सव, भिलाई में ट्रस्ट की पुस्तक का लोकार्पण

8 सितंबर, 2012 को साक्षरता दिवस पर भिलाई, म.प्र. में माता कौशल्या महोत्सव के अवसर पर राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित एवं डॉ. परदेशी राम वर्मा लिखित पुस्तक 'कांकेर के गाँधी : इंदरू केंवट' पुस्तक का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इंदरू केंवट कांकेर के गाँधी माने जाते हैं और इसे एनबीटी जैसी प्रतिष्ठित संस्था ने प्रकाशित कर महत्वपूर्ण काम किया है। उन्होंने कहा कि यह एक प्रेरक पुस्तक है। विदित हो कि परदेशी राम वर्मा ट्रस्ट की एक अन्य पुस्तक 'मिनीमाता' के भी लेखक हैं। कार्यक्रम का आयोजन 'अगासदिया' द्वारा किया गया।

अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस, 15 अक्तूबर

हर वर्ष 15 अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस दिवस को मनाए जाने का उद्देश्य ग्रामीण महिला के कार्य एवं समुदाय के प्रति उनके योगदान का सम्मान करना है। इस दिवस के माध्यम से ग्रामीण महिला द्वारा कृषि क्षेत्र में उनके योगदान तथा सकल ग्रामीण विकास में उनके कार्यों को मान्यता एवं सम्मान दिया जाता है।

श्री ए. सेतुमाधवन नेशनल बुक ट्रस्ट के नए अध्यक्ष

श्री ए. सेतुमाधवन ने 12 सितंबर, 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नए अध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने प्रो. विपिन चंद्र का स्थान लिया है जो प्रख्यात इतिहासकार एवं नेशनल रिसर्च प्रोफेसर हैं।

सेतु के नाम से लोकप्रिय श्री ए. सेतुमाधवन (जन्म 1942) आधुनिक मलयालम कथा साहित्य के अग्रणियों में से एक हैं जिन्होंने सन् साठ और सत्तर के दशकों के आरंभिक वर्षों के दौरान अपनी लेखनी के द्वारा साहित्यिक संवेदनशीलता में एक आमूलचूल परिवर्तन लाया। अपने लगभग साढ़े चार दशकों की लंबी साहित्यिक यात्रा में सेतु ने 17 से अधिक उपन्यास तथा 20 कहानी संग्रह लिखे। उनके अनेक उपन्यासों एवं कहानियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है। सेतु अनेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं। इनमें प्रमुख हैं : साहित्य अकादेमी सम्मान, केरल साहित्य अकादेमी सम्मान तथा वायलर सम्मान। उनकी तीन कृतियों पर फिल्म का निर्माण भी हुआ है जिसमें *पांडवापुरम* की काफी ख्याति है। इस पर बांग्ला भाषा में भी *निराकार छाया* नाम से फिल्म बनी है।

विज्ञान विषय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत सेतु ने बहुत ही कम आयु में अपने व्यावसायिक करिअर की शुरुआत की। इस क्रम में वे देश के अनेक भागों में गए। यह समय उनके जीवन का एक प्रयोगात्मक समय था जिसने उनकी साहित्यिक संवेदनशीलता को आकार दिया और जो उनकी अनेक महत्वपूर्ण कृतियों में प्रतिबिंबित भी हुआ। उन्होंने बैंकिंग सेवा में स्टेट बैंक समूह में प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में अपनी नौकरी की शुरुआत की। फिर उन्होंने कॉरपोरेशन बैंक में जी. एम. (जेनरल मैनेजर) के रूप में पद संभाला। तदंतर, देश के निजी क्षेत्र के एक बड़े बैंक, साउथ इंडियन बैंक के अध्यक्ष एवं सीईओ बने। बैंकिंग सेवा तथा साहित्यिक यात्राओं के क्रम में उन्हें विदेशों में भी पर्याप्त भ्रमण का अवसर मिला, जहाँ अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में उन्होंने भागीदारी की। वर्तमान में वे साहित्य अकादेमी के मलयालम सलाहकार समिति के बोर्ड में शामिल हैं।

लघु कथा

सर्वश्रेष्ठ दान

ऋषि तपोवन में महात्मा रघु का आश्रम था। उनके आश्रम में अनेक शिष्य रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। एक दिन एक शिष्य उनके पास पहुँचा। वह बड़ा चिंतित था। ऋषि ने पूछा, "बेटे, बड़े उदास दिखाई देते हो। बताओ, तुम्हारी चिंता क्या है?"

शिष्य ने बताया, "गुरु जी, मैंने नगर भ्रमण किया है। मैंने देखा, बहुत-से लोग बेहद गरीब हैं। वे दुख भरा जीवन जी रहे हैं। मैं उनकी गरीबी और दुख दूर करना चाहता हूँ, ताकि वे सुखी हों और खुशहाल जीवन जिएँ। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि मुझे धन पाने का उपाय बताएँ। मेरे पास ढेर सारा धन हो और मैं लोगों की गरीबी दूर कर सकूँ।"

महात्मा मुस्कराकर बोले, "बेटे, तुम ठीक कह रहे हो। देश में गरीबों और दुखी लोगों की संख्या अधिक है। परंतु तुम्हारी यह सोच ठीक नहीं है कि धन देकर उनकी गरीबी और दुख को दूर किया जा सकता है। असल में लोगों का स्वभाव ही उन्हें गरीब या अमीर बनाता है। बहुत-से लोग अपने स्वभाव के कारण गरीब बने रहते हैं। मान लो, मैं तुम्हें धन सिद्धि का कोई मंत्र बता दूँ। उससे तुम्हें बहुत सारा धन मिल जाए तो बताओ, तुम कितने लोगों को धन बाँटोगे? लोगों को जैसे ही पता चलेगा कि तुम मुफ्त में धन बाँट रहे हो तो हजारों लोग तुम्हारे पास दौड़े आएँगे। तुम धन बाँटते-बाँटते थक जाओगे लेकिन लेने वालों की संख्या कम नहीं होगी। इस तरह तो तुम कर्मफल के सिद्धांत को झूठा करके प्रकृति के चक्र को ही बिगाड़ दोगे। मुझे बताओ, तुम्हारी इस दानवीरता से क्या लाभ होगा?"

शिष्य ने उदास होकर कहा, "आपकी बात ठीक है गुरु जी, फिर भी मैं लोगों के दुख और गरीबी दूर करना चाहता हूँ। कृपा कर कोई उपाय बताएँ।"

महात्मा बोले, "बेटा, इसका सुगम उपाय है विद्यादान करना। ज्ञानदान करना। शिक्षा के द्वारा बच्चों में उत्तम चरित्र निर्माण करना। बच्चों को ज्ञान देने के साथ उन्हें परिश्रम का महत्व भी बताया जाना चाहिए, ताकि वे बड़े होकर आत्मनिर्भर बन सकें। विद्यादान और ज्ञानदान से ही भटके हुए लोगों को सही मार्ग पर लाया जा सकता है। इसी से उनकी गरीबी और दुख को दूर किया जा सकता है। बेटे, तुम मानव सेवा करना चाहते हो। लोगों को सुखी बनाना चाहते हो तो इसी उपाय से काम करो। तुम सफल होगे।"

शिष्य को उनकी बात ठीक लगी। उसे विश्वास हो गया कि विद्यादान और ज्ञानदान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।

कमलचंद वर्मा, महू, म.प्र.

ललिता का सिंदूर

जगन्नाथ 'विश्व'

आकुल व्याकुल दुनिया सारी तुम बिन ओ रणशूर
आँख में पानी है
पूछ रहा रो-रोकर हमसे 'ललिता' का सिंदूर
कहाँ वह दानी है

तुममें सागर-सी गहराई
और हिमालय-सी ऊँचाई
मंजिल दौड़ स्वयं ही आई
तरुणाई तुमसे शरमाई
कहाँ हो सादगी के महा सुदामा मानवता के मयूर
दुःखी हर प्राणी है

तुमने सबको गले लगाया
हर भूले को पथ दिखाया
सबको जीवन धर्म सिखाया
शत्रु से भी हाथ मिलाया
धन्य-धन्य वह माता जिसने जन्मा तुम-सा नूर
जगत ने मानी है

मन से सदा गरीबी झाँकी
मेहनत की कीमत आँकी
सूनी देखकर गोदी माँ की
दृष्टि ढूँढ़ती है दुनिया की
ओ गुदड़ी के लाल हुए क्यों आँखों से तुम दूर
सूनी रजधानी है

ममता का सम्मान जगाया
समता का दीपक चमकाया
अर्थ अहिंसा का समझाया
विश्व शांति ध्वज फहराया
निभाया गांधी नेहरू के आदर्शों को तुमने भरपूर
बात बलिदानी है

कायरता को थप्पड़ मारा
पौरुषता का रूप सँवारा
युद्ध विरोधी युद्ध तुम्हारा
जन-जीवन प्रबल सहारा
जय जवान और जय किसान, का हुआ अमर दस्तूर
युग की वाणी है

जब तक सूरज चंदा प्यारा
और प्रवाहित गंगा धारा
कोटि-कोटि जन ने उच्चारा
अमर रहेगा नाम तुम्हारा
करो श्रद्धा के फूल ओ महा यात्री हम सबके मंजूर
शेष निशानी है

नागदा, म.प्र.

महात्मा गाँधी : जन्मदिन, 2 अक्तूबर पर काव्यमयी स्मरण

गाँधी जी के तीन बंदर

रूपनारायण काबरा

तीन बंदरों को गाँधी ने
अपना शिक्षक माना था
और इन्हीं के माध्यम से ही
अच्छा बनना जाना था।

आँखें जिसकी बंद पड़ी हैं
उस बंदर से सीखा इनने
'बुरा न देखो कभी किसी में
खुद अपने अंदर को झाँको।'
और दूसरा बंदर जिसके
मुँह पर लगा हुआ है ताला
उसने सिखलाया बापू को
'बुरा न बोलो कभी किसी से
अच्छी बात सदा ही बोलो।'

कान बंद हैं जिस बंदर के
गाँधी ने उससे ज्ञान लिया
'नहीं किसी की सुनो बुराई
बुरी बात को कान न दो।'

अपने इन गुरुओं को गाँधी
सदा पास ही रखते थे
कभी न भूले सीख गुरु की
शिक्षा पर नित चलते थे।

जयपुर, राजस्थान

राष्ट्रपिता

विनोद चंद्र पांडेय 'विनोद'

हे राष्ट्रपिता! शत-शत प्रणाम।

जब था भारत निज पराधीन
चेतना भरी तुमने नवीन
कर आजादी हित आंदोलन
नव ज्योति जगा दी ग्राम-ग्राम
हे राष्ट्रपिता! शत-शत प्रणाम।

कर अस्त्र अहिंसा का प्रयोग
अपनाया तुमने असहयोग
चल पड़े सत्य के शुभ पथ पर
क्षण भर न लिया तुमने विराम
हे राष्ट्रपिता! शत-शत प्रणाम।

छेड़ा भीषण संग्राम घोर
यातना सही कितनी कठोर
कारागारों में किया वास
छोड़ा न लक्ष्य अपना ललाम
हे राष्ट्रपिता! शत-शत प्रणाम।

फूँका तुमने प्रेरणा-मंत्र
हो सका देश जिससे स्वतंत्र
इतिहासों के अध्यायों में
स्वर्णाक्षर में है लिखा नाम
हे राष्ट्रपिता! शत-शत प्रणाम।

लखनऊ, उ.प्र.

गाँधी जी

आकाँक्षा यादव, *इलाहाबाद, उ.प्र.*

सबकी आँखों के थे तारे
गाँधी राष्ट्रपिता हमारे
बापू कहके उन्हें बुलाते
बड़ों के वे महात्मा कहाते।

देश को आजाद कराया
अँग्रेजों को दूर भगाया
जीवन सीधा-सादा उनका
कभी किसी को नहीं सताया।

दो अक्तूबर जब भी आता
उनकी याद दिलाता है
असत्य से कभी न डरना
ऐसी सीख सिखाता है।

मेहनत करना सीखेंगे हम
सचमुच जीना सीखेंगे हम
पुस्तक से हम प्रीति लगाकर
ज्ञान को पीना सीखेंगे हम।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

शब्द-शब्द मोती-से सुंदर
हर पग दीप जलाते
जीवन की हर कला सिखाकर
नूतन पथ दिखलाते।
सुकीर्ति भटनागर, पटियाला, पंजाब

सच्चा होगा सबका सपना
साक्षर होगा भारत अपना।
रचना सिद्धा, जयपुर, राजस्थान

अक्षर ज्योत
घर-घर जलाएँ
पढ़े-पढ़ाएँ।
सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

साक्षरता को अपना ध्येय बनाओ
जीवन अपना सफल बनाओ।
डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

जन-साधारण में फैली हुई व्यापक निरक्षरता भारत का कलंक है। –महात्मा गाँधी

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सितंबर 2012, सा. सं. :** मुख पृष्ठ रिपोर्ट 'लखनऊ में साक्षर भारत महोत्सव' जानकारी बढ़ाने वाली थी। लक्ष्मी विमल की कविता 'हिंदी सखी सहेली है' हिंदी के महत्व को उजागर करती है। 'नवसाक्षरों के लिए' पृष्ठ में कुसुम शर्मा की कविता 'पढ़ो अक्षर-अक्षर' अच्छी लगी। **शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा

☐ लक्ष्मी विमल की कविता दिल को छू गई। फादर बुल्के समेत अनेक हिंदीसेवी व्यक्तित्वों के विचार मनन करने योग्य हैं। देश के निरक्षरों को साक्षरता की ओर आकृष्ट करने की जो मुहिम आपने **साक्षरता संवाद** के माध्यम से छेड़ रखी है वह न केवल प्रशंसनीय है बल्कि आने वाली पीढ़ी भी आपके इस योगदान को याद करेगी। **दुर्गा प्रसाद शर्मा,** बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ **साक्षरता संवाद** के हर अंक में नई ताजगी मिलती है। नई पुस्तकों से परिचय मिला। हिंदी दिवस को लेकर कुछ अच्छी सामग्री पढ़ने को मिली। राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में **सा. सं.** बड़ा योगदान कर रहा है। **कश्मीरी लाल चावला,** मुक्तसर, पंजाब

☐ जानकर प्रसन्नता हुई कि आप **साक्षरता संवाद** का प्रकाशन कर रहे हैं। शिक्षक होने के नाते मैं भी इस अभियान से जुड़ा हूँ। कृपया पत्रिका की प्रति नियमित भिजवाएँ।
विनोद कुमार दुबे, मुंबई, महाराष्ट्र

☐ **अगस्त :** स्वाधीनता दिवस के अवसर पर काव्य प्रस्तुति सुंदर व प्रभावशाली लगी। अन्य रचनाएँ भी रोचक व पठनीय थीं।
साक्षरता से / खुलता ज्ञान-द्वार / साक्षर बनो!
प्रकाश 'सूना', मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

☐ **सा. सं.** का आकार भले ही छोटा हो पर इस संक्षिप्ति में भी ज्ञान संपदा विशाल और बेमिसाल होती है।
डॉ. बी.पी. दुबे, सागर, म.प्र.

☐ श्यामलाल गुप्त पार्षद का गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' प्रकाशित कर आपने अच्छा काम किया। मैथिलीशरण गुप्त की रचना उनके चित्र सहित प्रकाशित की उसके लिए भी धन्यवाद।
दयाराम महरिया, सीकर, राजस्थान

☐ **जुलाई :** कालजयी रचनाकार प्रेमचंद पर सामग्री अच्छी लगी। कविताओं की प्रस्तुति तथा नवसाक्षरों के लिए कविताएँ प्रेरणाप्रद लगीं। अंतिम पृष्ठ पर नलिनी कांत जी की हायकु क्षणिका के दर्द को महसूसा जा सकता है। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.

☐ 'शुभतारिका' पत्रिका के जुलाई अंक में पत्र-पत्रिकाएँ स्तंभ में साक्षरता संवाद का परिचय पढ़ा। अवलोकन करना चाहता हूँ। मैं एक शिक्षक हूँ। पत्रिका मेरे लिए उपयोगी होगी। कृपया भेजें।
श्लेष चंद्राकर, गड़रूपारा, महासमुंद, छ.ग.

☐ नवसाक्षरों के उत्साह को जागृत कर आपने **सा. सं.** को लोकप्रियता दी है। आपकी इस पहल का क्या साक्षर और क्या निरक्षर, हर तबके में स्वागत हो रहा है। विद्यालय के पुस्तकालय के हमारे बाल पाठक **सा. सं.** का बेसब्री से इंतजार करते हैं।
कृष्णदेव चतुर्वेदी (शिक्षक), भोपाल, म.प्र.

☐ साक्षरता का दीप जलाते आप
नित उजियारा फैलाते आप
जहाँ है अमावस की रात काली
वहाँ पूर्णिमा लाते आप।
पढ़ना-लिखना सबसे बेहतर
सबको यही जतलाते आप
पढ़-लिख आदमी 'आदमी' बनता
यह सबको बतलाते आप।
पुस्तकें जिंदगी जगमग करतीं,
यही सत्य बिखराते आप
ज्ञान, विवेक का अभिनंदन कर,
पुस्तक के गुण गाते आप। **प्रो. शरद नारायण खरे,** मंडला, म.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। –**

अब 'व्यंजन' की बारी है

प्रो. उषा यादव

आओ अपना बस्ता लेकर
पढ़ने की तैयारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'क' से कबूतर कठिन नहीं है
'ख' से है खरगोश यहाँ
'ग' से गमला धरा हुआ है
'घ' से रक्खी घड़ी वहाँ
'ङ' को दोहराओ मन ही मन
उच्चारण में भारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'च' से चम्मच, 'छ' से छतरी
'ज' से है जहाज भारी
'झ' से झज्झर धरा हुआ है
पर इसमें पानी खारी
'ञ' को याद करो जी झटपट
मैया तुम पर वारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'ट' से टमटम पर चढ़ जाओ
'ठ' से ठठेरा यहाँ खड़ा
'ड' से डलिया-डमरू होते
'ढ' से ढक्कन वहाँ पड़ा
'ण' को याद किया पल भर में
इसमें शान तुम्हारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'त' से है तरबूज रसीला
'थ' से थन गैया का है
'द' से है दवात और 'ध' से
धनुष बड़े भैया का है
'न' से नल में क्या मुश्किल है
जल की मारा-मारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'प' से है पतंग यह सुंदर
'फ' से फल मीठे खाए
'ब' से बकरी भोली-भाली
'भ' से भड़भूजा आए
'म' से मछली रानी जल में
तैर रही अति प्यारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'य' से यक्ष यह भीमकाय है
'र' से रथ है आकर्षक
'ल' से लड़की, 'व' से वन है
'श' से शरीफा है मोहक
'ष' से है षट्कोण निराला
'स' से सरौता भारी है
कल सारे 'स्वर' सीखे तुमने
अब 'व्यंजन' की बारी है।

'ह' से हल है, जिसके बल पर
कृषक खेत जोते अपना
'क्ष' से क्षत्रिय, फिर 'त्र', 'ज्ञ' है
पुस्तक नहीं रही सपना
हाथ लगे तो झट पढ़ डालें
सचमुच जीत हमारी है
'स्वर' 'व्यंजन' सब सीखे हमने
बस 'मात्रा' की बारी है।

आगरा, उ.प्र.

मिट्टी की पुस्तकें

राधेलाल 'नवचक्र', भागलपुर, बिहार

बेबीलॉन के क्ले-टैबलेट की एक छवि

एक समय था, जब कागज का आविष्कार नहीं हुआ था, मगर लोगों को अक्षर का ज्ञान था। वे अपने ज्ञान को स्याही से पत्तों पर लिखकर उन्हें सुरक्षित रखते थे।

जिस तरह कुम्हार अपनी चाक पर मिट्टी के बरतन बनाने के पहले उसके लायक मिट्टी को तैयार करता है, उसी तरह की कच्ची मिट्टी के आयताकार स्लेटनुमा ठोस ढाँचा तैयार कर उस पर नुकीली चीज से लोग ज्ञान की बातें उकेरकर लिखा करते थे। फिर सभी स्लेटों को धूप में सुखाकर एक जगह एकत्र कर आग में पकाया जाता था। इससे लिखावट पक्की हो जाती। पानी में गलती नहीं थी। ऐसे ही स्लेटों पर लिखी ज्ञान की बातों को मिट्टी की पुस्तक के रूप में ज्ञानी बरसों तक सुरक्षित रखते थे। पुस्तक के महत्व का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है।

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/10/2012

विश्व दृष्टि दिवस प्रत्येक वर्ष अक्तूबर माह के दूसरे गुरुवार को मनाया जाता है। यह अंधत्व और दृष्टिहीनता के प्रति जनजागरूकता जगाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष यह दिवस **11 अक्तूबर** को मनाया गया।

नेशनल बुक ट्रस्ट

बठिंडा पुस्तक मेला

27 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2012

स्थान : पंजाबी यूनिवर्सिटी
रीजनल सेंटर, बठिंडा

समय : प्रातः 11.00 बजे से रात्रि 8.00 बजे तक

प्रवेश निःशुल्क

आप सादर आमंत्रित हैं।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070